बौद्ध धर्म : मानव कल्याण का सशक्त माध्यम

राम चन्द्र[1]

मानवता के पोषक के रूप में बौद्ध धर्म भारतीय जनमानस में उस दौर की सामाजिक हलचल की परिणिति रही है जब समाज में घोर अंधविश्वास, रूढ़िवादिता एवं विभिन्न मत–मतान्तरों के मध्य तीव्र वैचारिक मतभेद रहा है। मानव का मानव के प्रति प्रेम का सन्देस लेकर एक वैचारिक क्रान्ति के रूप में बौद्ध धर्म ने समाज में सामाजिक भाईचारे, सौह्यर्द एवं पारस्परिक सहयोग की भावना को लोगो के ह्रदय में संचारण किया। मानव के दुःख के निवारण एवं कल्याण हेतु बौद्ध धर्म ने जिस सामाजिक समरसता की बात सिद्धान्तों के अन्तर्गत कहीं व उन्हीं बातों को व्यवहार में चरितार्थ भी किया।

प्रस्तुत शोध पत्र के अन्तर्गत वैचारिक क्रान्ति के रूप में बौद्ध धर्म की पृष्ठभूमि एवं उसके सैद्धान्तिक विषयों की चर्चा द्वैतीयक स्श्रोतो के माध्यम से कि गई है।

अवधारणात्मक शब्दावली: बौद्ध धर्म, सामाजिक पुर्नउत्थान, ज्ञानपरक चिन्तन एवं सामाजिक समरसता गौतम बुद्ध के ऐसे महा चिन्तक है जिनका प्रभाव जाति के चिन्तन और जीवन पर किसी अन्य से सम नहीं पड़ा और धार्मिक परम्परा के संस्थापक के रूप में ऐसे धर्मप्राण है जिनका आग्रह किसी अन्य से न कम विस्तृत है न कम गम्भीर । विरूव चिन्तन और संस्कृत मानव जाति की विरासत में उनका अपना स्थान है क्योंकि बौद्धिक प्रमाणिकता, नैतिक उत्कृटता और आध्यात्मिक अर्न्तदृष्टि की कसौटी पर वे निस्सन्देह इतिहास के एक महान व्यक्तित्व के रूप में उतरते है।

वैदिक यज्ञ प्रधान धर्म प्राचीन भारत में आर्यो के मन पर हावी था। धीरे–धीरे वह स्वंय इतना कर्मकाण्डमय बन गया कि उसका विरोध सुरू हो गया। मुंडकोपनिषद में कहा गया कि यज्ञ भव साागर से परलोक में ले जाने वाली नौका है। "अपना दुख तुम्हे स्वंय ही दूर करना होगा। दुसरा कोई तुम्हारा दुख दूर करने नहीं आयेगा।" यह कल्याणकारी उपदेश महामानव बुद्ध ने अपने परम शिष्य आनन्द को दिया था। इसका पूरक सुत्र भी महामानव बुद्ध ने आनन्द को ही बताया था जो प्रज्ञा बुद्धि या विमल ज्ञान से सम्बन्धित था। कोई भी दुखी मनुष्य जब तक वह महसूस न करे की आज वह दुःखी है लेकिन कल वह सुखी था। तब तक वह दुःख को दुर करने के लिए प्रयास नहीं करेगा। कल और आज अथवा प्राचीन और वर्तमान जीवन में अन्तर बतलाने वाली अथवा उस अन्तर की अनुभूति कराने वाली विद्या का नाम है प्रज्ञा या विमल ज्ञाल। मनुष्य के मन में यह भेद या अन्तर बतलाने वाली और सत्य को दर्शाने वाली प्रज्ञा, बुद्धि का जब तक विकास नहीं होता तब तक वह कल के सुखी जीवन और वर्तमान के दुखी जीवन में अन्तर नहीं कर पाता और वह भाग्य–भगवान देवी–देवता, कर्मकाण्डो और अन्ध विश्वासों में जकड़ा रहता है और मारा–मारा घुमता फिरता रहता है। इसलिए सद्ज्ञान सद्बुद्धि की आवश्यकता होती है। अतः यथागत बुद्ध ने कहा या कि स्वयं प्रकाश बनो, ज्ञानवान बनो ताकि उस ज्ञान प्रकाश से अन्ध विश्वास के जाल को तोड़कर स्वंय अपना रास्ता खोज सको और स्वंय अपने मालिक बन सको। वस्तुतः महामानव बुद्ध के दोनो सूत्र– अत्त दीपा भवः और अत्त नयो भवः बौद्ध धर्म के सामाजिक और आर्थिक दर्शन के आधार

[1] शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

स्तम्भ है।

संसार के लोग जिन प्रमुख कारणो से दुखी है उनमें एक कारण 'भूख' है महामानव बुद्ध ने 'धम्मपद' में भूख को सबसे बड़ा रोग बताया है। इस बड़े रोग की दवा 'रोटी' है। उसके बिना कोई भी प्राणी जीवित नही रह सकता भोजन जीवन का आधार है। कदाचित् संसार में महामानव बुद्ध पहले अर्थशास्त्री थे जिन्होंने रोटी को अर्थशास्त्र से जोड़ा और भोजन को मनुष्य की पहली आवश्यकता बताया।

साम्यवादी विचारधारा में रोटी कपड़ा और मकान का नारा देकर मनुष्य के लिए उनकी प्राथमिकताये दर्शायी जाती है। उसका जनक कार्ल मार्क्स को माना जाता है। लेकिन कार्लमार्क्स तो तथागत बुद्ध के दो हजार साल से भी अधिक समय बाद हुए। उसमें कोई सन्देह नहीं है कि उन्होंने इस युग में दुनिया के अर्थशास्त्र में एक हलचल मचा दी। वे एक महान अर्थशास्त्री थे। उन्होंने बुद्ध और उनके धर्म तथा साहित्य को पढ़ा और समझा था और रोटी की आवश्यकता और प्राथमिकता को बुद्ध से ही ग्रहण किया था।

इस समय भी संसार के लागों का और विशेषकर वैज्ञानिक दृष्टि वाले युवको का ध्यान बौद्ध की ओर विशेष रूप से जा रहा है। कभी–कभी तो लोग इसका कारण–कारण पूछते है। बौद्ध धर्म सामाजिक उत्थान और प्रगति का केन्द्र बिन्दू मानव को ही मानता है इसके लिए वह किसी देवी–देवता अथवा आत्मा–परमात्मा को उत्तरदायी नहीं मानता। तथागत बुद्ध ने स्वंय कहा था "मै तो रास्ता दिखाने या बताने वाला हूँ उसे आप स्वंय चलकर ही लक्ष्य को प्राप्त कर सकोगे और दुखो से छुटकारा पा सकोगे" इसी प्रकार तथागत ने अंन्धविश्वासों और थोथे कर्मकाण्डों का भी खण्डन किया था। उन्होंने वर्ण, जाति, ऊँच–नीच की भावना और छुआ–छूत जैसे भंयकर विनाशकारी संक्रामक रोग से दूर रहकर समता, बन्धुता, न्याय करूणा, दया और स्वतन्त्रता पूर्ण आचरण करने पर वल दिया था। उन्होंने गणराज्य के लोगो को उपदेश देते हुए स्पष्ट कहा था "किसी बात पर चाहे किसी धर्म ग्रन्थ में लिखी हो या किसी बड़े आदमी ने कही हो अथवा किसी धर्म गुरू ने कही हो अचानक बिना सोचे समझे विश्वास मत करो। उसे सुन कर उसपर विचार करो देखो, यदि वह तुम्हारे कल्याण के लिए हो समाज और देश के लिए कल्याणकारी हो तभी उसे मानो अन्यथा त्याग दो" ऐसा था बुद्ध की वैज्ञानिक स्वतन्त्रता का घोषणा पत्र जहा अंन्धविश्वास के लिए कोई स्थान ही नहीं था। संसार का कोई भी दूसरा धर्म ऐसी वैचारिकी स्वतन्त्रता नहीं देता।

तथागत बुद्ध ने ऐसे समाज की रचना की थी जिसमें कोई वर्ण और जाति देश–प्रदेश, पूर्व–पश्चिम आदि का भेद–भाव नहीं था छुआ–छूत ऊँच–नीच का बटवारा न था। सभी मनुष्य समान है। किसी जाति या वर्ध को कोई ऐसे प्राकृतिक चिन्ह नही प्राप्त है जिन्हे देखकर दूर से ही गाय, भैस, हाथी घोड़ा, ऊट अथवा आम, नीम, बेर, मेढ़क, चूहा तक पहचान लिया जाय। सुदृढ़ तर्को के आधार पर गौतम बुद्ध ने वर्ण व्यवस्था जाति–पॉति, ऊँच–नीच, छुआ–छूत, भेदभाव की धज्जियॉ उड़ा दी। सामाजिक समानता की यह महान देन भगवान बुद्ध की है।

भारत में बहुसंख्यक लोग जिन्हे शूद्र वर्ण का कहा जाता है जिसमें हिन्दु धर्म की ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य की जातियों के अलावा अन्य सभी जातियॉ जिकी जनसंख्या ससत्तर से पचहत्तर फीसदी तक होगी, बौद्ध ही थे। उनके आचार–विचार, तीज–त्योहार आज भी अन्य वर्णो से भिन्न ही है। यही भिन्नता उन्हे बौद्ध धर्म के समीप

ला देती है यही कारण है कि बोधिसत्व डॉ. भीमराव अम्बेडकर के बौद्ध आन्दोलन के पहले जहाँ भारत देश में दस–पाँच भिक्षु एक साथ इकठ्ठे हो सकना कठिन था, आज सैकड़ो नहीं बल्कि हजारो की संख्या में इकठ्ठे हो जाते है वे लोग आज अपन गौरवशाली इतिहास को जानकर अपने बौद्ध धर्म में वापस लौट रहे है। इस परिवर्तन से घबड़ाकर वर्ण व्यवस्था और जाति प्रथा के पोषक लागों ने धर्मान्तरण को रोकने के लिए कानून तक बना देने का दुस्साहस दिखाया लेकिन भारत की समझदार जनता ने उन्हें सबक सिखा दिया।

बौद्ध धर्म समवायवादी धर्म है जो सबको साथ लेकर चलता है यह एक ऐसा धर्म है जो सभी मनुष्यों को सम्मान और गौरव प्रदान करता है यही नहीं विफल साहित्य, पवित्र बौद्ध केन्द्र, विशाल बौद्ध स्मारक, गरिमामयी संस्कृति भी प्रदान करता जैसे ही लोग बौद्ध धर्म अंगीकार करते है। वे विश्व बौद्ध परिवार के एक सम्माननीय सदस्य हो जाते है। बौद्ध धर्म की यह विशेषता है कि यह विज्ञान सम्मत धर्म हैं ज्ञान और चिन्तन की इसमें प्रधानता है। वर्ण जाति ऊँच–नीच, छुआ–छूत आदि सामाजिक बुराइयों से दूर है यह भारत का ऐसा धर्म है जो भारत में उत्पन्न भारत में फूला–फला है। वर्तमान में बुद्ध और उनका धर्म ही इस कराहती हुई मानवता को बचा सकता है और विनाश की ओर बढ़ रहे संसार की रक्षा कर सकता है। अस्तु हम अपने पुराने धर्मरूपी घर में वापस लौट रहे है।

सन्दर्भ सूची

- डॉ. ऑगने लाल , "बौद्ध संस्कृति के विविध आयाम", मानव संसाधन विकास मन्त्रालय भारत सरकार–2008.
- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, "गौतम बुद्ध जीवल और दर्शन", राजपाल एण्ड संन्स दिल्ली–6 2012.
- राहुल सांकृत्यायन, "बौद्ध दर्शन", किताब महल इलहाबाद, सस्करण–2013.
- डॉ. सत्यनारायण दूबे, "बौद्ध एवं जैन धर्म तथा दर्शन ", विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी–संस्करण 2004.
- पी. वी. बापट, "बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष", प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मत्रालय भारत सरकार 2010.
- एम. एन. दास गुप्ता–: "ए हिस्ट्री ऑफ इडियन फिलासफी".
- सी. डी. शर्मा–: "ए किटिकल सर्वे ऑफ इंडियन फिलासफी".